भरतपुर नरेश भारतेंदु जवाहरमल महाराज को "भारतेंदु" की उपाधि कैसे मिली?

यह बात साबित हो चुकी है कि भगवान श्रीकृष्ण जाट थे। पाँडव और कौरव भी। ब्रजभूमि के जाट स्वंय को चँद्रवंशीय जाट मानते हैँ। भरतपुर के राजचिन्ह मेँ भी चँद्रवंशीय अंकित हैँ। इस तथ्य को प्रमाणित करता यह किस्सा सुनिये:-

शूरवीर सुरजमल जी के पुत्र वीर भारतेँदु जवाहर जी के दरबार मेँ एक बार जयपुर का दरबारी आकर बोला- "आपको जयपुर महाराजा को स्वंय से श्रेष्ठ मानना चाहिए क्योँकि उनके पूर्वज सूर्यवंशियो ने समंदर मेँ पुल बनाया था।"

इस पर गर्विले वीर जवाहरजी ने जवाब दिया कि- "हजारोँ की सेना लेकर पुल बनाना कौनसी बडी बात है, हमारे पूर्वजोँ ने तो अँगुली पर गोवर्धन पर्वत को 7 दिन टिकाये रखा था। अब आप बताओ जयपुर महाराजा बडा है या हम चँद्रवंशीय जाट वीर।"

जब तक जवाहर जी जिँदा थे उन्होने भारत की राजधानी भरतपुर को बनाये रखा था। दिल्ली केवल नाम मात्र थी। और इस वाकये के बाद से आप **"भारतेंदु"** कहलाये|

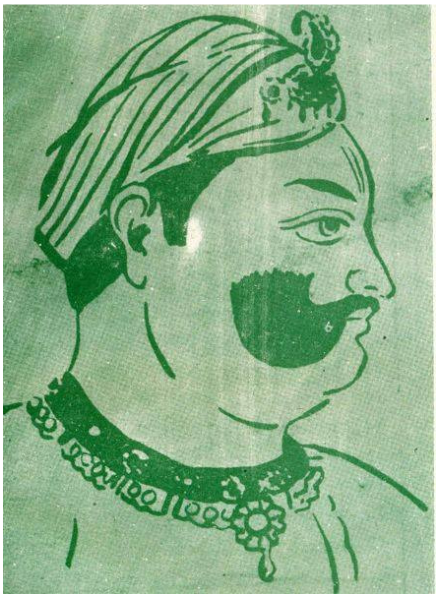

गर्विले शूरवीर महाराजा जवाहरसिँह जी को पावन वंदन